اٰیاتها ۵۰ ۷۷ سُورَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ ۳۳ رکوعاتها ۲

सूरए मुर्सलात मक्किय्या है, इस में पचास आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۙ﴿۱﴾ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۙ﴿۲﴾ وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۙ﴿۳﴾

क़सम उन की जो भेजी जाती हैं लगातार[2] फिर ज़ोर से झोंका देने वालियां फिर उभार कर उठाने वालियां[3]

فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۙ﴿۴﴾ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۙ﴿۵﴾ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۙ﴿۶﴾ اِنَّمَا

फिर ह़क़ नाह़क़ को ख़ूब जुदा करने वालियां फिर उन की क़सम जो ज़िक्र का इल्क़ा करती हैं[4] हुज्जत तमाम करने या डराने को बेशक

تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ؕ﴿۷﴾ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۙ﴿۸﴾ وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۙ﴿۹﴾

जिस बात का तुम वा'दा दिये जाते हो[5] ज़रूर होनी है[6] फिर जब तारे मह़्व कर दिये जाएं और जब आस्मान में रख़्ने पड़ें

وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۙ﴿۱۰﴾ وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ؕ﴿۱۱﴾ لِاَیِّ یَوْمٍ

और जब पहाड़ ग़ुबार कर के उड़ा दिये जाएं और जब रसूलों का वक़्त आए[7] किस दिन के लिये

اُجِّلَتْ ؕ﴿۱۲﴾ لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۚ﴿۱۳﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ؕ﴿۱۴﴾ وَيْلٌ

ठहराए गए थे रोज़े फ़ैसला के लिये और तू क्या जाने वोह रोज़े फ़ैसला कैसा है[8] झुटलाने वालों

1 : सूरए मुर्सलात मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, पचास 50 आयतें, एक सो अस्सी 180 कलिमे, आठ सो सोलह 816 ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि वल मुर्सलात शबे जिन्न में नाज़िल हुई, हम सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की रिकाबे सआ़दत में थे जब मिना की ग़ार में पहुंचे वल मुर्सलात नाज़िल हुई, हम हुज़ूर से इस को पढ़ते थे और हुज़ूर इस की तिलावत फ़रमाते थे, अचानक एक सांप ने जस्त की हम उस को मारने के लिये लपके वोह भाग गया, हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम उस की बुराई से बचाए गए वोह तुम्हारी बुराई से। येह ग़ार मिना में ग़ारे वल मुर्सलात के नाम से मशहूर है। 2 : इन आयतों में जो क़िस्में मज़्कूर हैं वोह पांच सिफ़ात हैं जिन के मौसूफ़ात ज़ाहिर में मज़्कूर नहीं, इसी लिये मुफ़स्सिरीन ने इन की तफ़्सीर में बहुत वुजूह ज़िक्र की हैं, बा'ज़ ने येह पांचों सिफ़तें हवाओं की क़रार दी हैं, बा'ज़ ने मलाएका की, बा'ज़ ने आयाते क़ुरआन की, बा'ज़ ने नुफ़ूसे कामिला की जो इस्तिक्माल के लिये अब्दान की त़रफ़ भेजे जाते हैं, फिर वोह रियाज़तों के झोंकों से मा सिवाए ह़क़ को उड़ा देते हैं, फिर तमाम आ'ज़ा में उस असर को फैलाते हैं, फिर ह़क़ बिज़्ज़ात और बात़िल फ़ी नफ़्सिही में फ़र्क़ करते हैं और ज़ाते इलाही के सिवा हर शै को हालिक देखते हैं, फिर ज़िक्र का इल्क़ा करते हैं इस त़रह़ कि दिलों में और ज़बानों पर अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र ही होता है और एक वज्ह येह ज़िक्र की है कि पहली तीन सिफ़तों से हवाएं मुराद हैं और बाक़ी दो से फ़िरिश्ते, इस तक़्दीर पर मा'ना येह हैं कि क़सम उन हवाओं की जो लगातार भेजी जाती हैं फिर ज़ोर से झोंके देती हैं, इन से मुराद अ़ज़ाब की हवाएं हैं (خازن وجمل وغیرہ) 3 : या'नी वोह रह़मत की हवाएं जो बादलों को उठाती हैं, इस के बा'द जो सिफ़तें मज़्कूर हैं वोह क़ौले अख़ीर पर जमाअ़ते मलाएका की हैं। इब्ने कसीर ने कहा कि فَارِقَات و مُلْقِیَات से जमाअ़ते मलाएका मुराद होने पर इज्माअ़ है। 4 : अम्बिया व मुरसलीन के पास वह़्य ला कर 5 : या'नी बअ़्स व अ़ज़ाब और क़ियामत के आने का 6 : कि उस के होने में कुछ भी शक नहीं। 7 : वोह उम्मतों पर गवाही देने के लिये जम्अ़ किये जाएं। 8 : और उस के होल व शिद्दत का क्या आ़लम है।

www.dawateislami.net

يَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۵﴾ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۶﴾ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ

की उस दिन ख़राबी[9] क्या हम ने अगलों को हलाक न फ़रमाया[10] फिर पिछलों को उन के

الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۷﴾ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۸﴾ وَيْلٌ يَّوْمَىٕذٍ

पीछे पहुंचाएंगे[11] मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं उस दिन झुटलाने

لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۹﴾ اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿۲۰﴾ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ

वालों की ख़राबी क्या हम ने तुम्हें एक बे क़दर पानी से पैदा न फ़रमाया[12] फिर उसे एक महफ़ूज़

مَّكِيْنٍ ﴿۲۱﴾ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۲۲﴾ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَيْلٌ

जगह में रखा[13] एक मा'लूम अन्दाज़े तक[14] फिर हम ने अन्दाज़ा फ़रमाया तो हम क्या ही अच्छे क़ादिर[15] उस दिन

يَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۲۴﴾ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿۲۵﴾ اَحْيَآءً وَّ

झुटलाने वालों की ख़राबी क्या हम ने ज़मीन को जम्अ करने वाली न किया तुम्हारे ज़िन्दों और

اَمْوَاتًا ﴿۲۶﴾ وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ﴿۲۷﴾

मुर्दों की[16] और हम ने उस में ऊंचे ऊंचे लंगर डाले[17] और हम ने तुम्हें ख़ूब मीठा पानी पिलाया[18]

وَيْلٌ يَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۲۸﴾ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿۲۹﴾

उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी[19] चलो उस की तरफ़[20] जिसे झुटलाते थे

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿۳۰﴾ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ

चलो उस धूएं के साए की तरफ़ जिस की तीन शाख़ें[21] न साया दे[22] न लपट से

اللَّهَبِ ﴿۳۱﴾ اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿۳۲﴾ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿۳۳﴾ وَيْلٌ

बचाए[23] बेशक दोज़ख़ चिंगारियां उड़ाती है[24] जैसे ऊंचे महल गोया वोह ज़र्द रंग के ऊंट हैं उस दिन

9 : जो दुन्या में तौहीद व नुबुव्वत और रोज़े आख़िरत और बअ्स व हिसाब के मुन्किर थे। 10 : दुन्या में अ़ज़ाब नाज़िल कर के जब उन्हों ने रसूलों को झुटलाया 11 : या'नी जो पहली उम्मतों के मुकज़्ज़िबीन की राह इख़्तियार कर के सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करते हैं उन्हें भी पहलों की त़रह़ हलाक फ़रमाएंगे। 12 : या'नी नुत्फ़े से 13 : या'नी रेह़्म में 14 : वक़्ते विलादत तक जिस को अल्लाह तआ़ला जानता है। 15 : अन्दाज़ा फ़रमाने पर। (مدارک) 16 : कि ज़िन्दे उस की पुश्त पर जम्अ़ रहते हैं और मुर्दे उस के बत्न में। 17 : बुलन्द पहाड़ों के। 18 : ज़मीन में चश्मे और मम्बअ़ पैदा कर के, येह तमाम बातें मुर्दों को ज़िन्दा करने से ज़ियादा अ़जीब हैं। 19 : और रोज़े क़ियामत काफ़िरों से कहा जाएगा कि जिस आग का तुम इन्कार करते थे उस की त़रफ़ जाओ। 20 : या'नी उस अ़ज़ाब की त़रफ़ 21 : इस से जहन्नम का धूआं मुराद है जो ऊंचा हो कर तीन शाख़ें हो जाएगा, एक कुफ़्फ़ार के सरों पर एक उन के दाएं और एक उन के बाएं और हिसाब से फ़ारिग़ होने तक उन्हें उसी धूएं में रहने का हुक्म होगा, जब कि अल्लाह तआ़ला के प्यारे बन्दे उस के अ़र्श के साए में होंगे। इस के बा'द जहन्नम के धूएं की शान बयान फ़रमाई जाती है कि वोह ऐसा है कि 22 : जिस से उस दिन की गरमी

www.dawateislami.net

يَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۳۴﴾ هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ

झुटलाने वालों की ख़राबी येह दिन है कि वोह न बोल सकेंगे[25] और न उन्हें इजाज़त मिले

فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَيْلٌ يَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۳۷﴾ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ

कि उ़ज़्र करें[26] उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी येह है फ़ैसले का दिन

جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۸﴾ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ﴿۳۹﴾ وَيْلٌ يَّوْمَىٕذٍ

हम ने तुम्हें जम्अ़ किया[27] और सब अगलों को[28] अब अगर तुम्हारा कोई दाउं हो तो मुझ पर चल लो[29] उस दिन झुटलाने

لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۴۰﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿۴۱﴾ وَّفَوَاكِهَ مِمَّا ع ۲۱

वालों की ख़राबी बेशक डर वाले[30] सायों और चश्मों में हैं और मेवों में से जो कुछ

يَشْتَهُوْنَ ﴿۴۲﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾ اِنَّا

उन का जी चाहे[31] खाओ और पियो रचता हुवा[32] अपने आ'माल का सिला[33] बेशक

كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۴۴﴾ وَيْلٌ يَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۴۵﴾ كُلُوْا

नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी[34] कुछ दिन खा लो

وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَيْلٌ يَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَ

और बरत लो[35] ज़रूर तुम मुजरिम हो[36] उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी और

से कुछ अम्न पा सकें **23 :** आतशे जहन्नम की **24 :** इतनी इतनी बड़ी **25 :** न कोई ऐसी हुज्जत पेश कर सकेंगे जो उन्हें काम दे। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत बहुत से मौक़अ़ होंगे बा'ज़ में कलाम करेंगे बा'ज़ में कुछ बोल न सकेंगे। **26 :** और दर हक़ीक़त उन के पास कोई उ़ज़्र ही न होगा क्यूं कि दुन्या में हुज्जतें तमाम कर दी गईं और आख़िरत के लिये कोई जाए उ़ज़्र बाक़ी नहीं रखी गई, अलबत्ता उन्हें येह ख़याले फ़ासिद आएगा कि कुछ हीले बहाने बनाएं, येह हीले पेश करने की इजाज़त न होगी। जुनैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि उस को उ़ज़्र ही क्या है जिस ने ने'मत देने वाले से रू गर्दानी की, उस की ने'मतों को झुटलाया, उस के एह़सानों की ना सिपासी (नाशुक्री) की। **27 :** ऐ सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तक्ज़ीब करने वालो ! **28 :** जो तुम से पहले अम्बिया की तक्ज़ीब करते थे, तुम्हारा उन का सब का ह़िसाब किया जाएगा और तुम्हें उन्हें सब को अ़ज़ाब किया जाएगा **29 :** और किसी त़रह़ अपने आप को अ़ज़ाब से बचा सको तो बचा लो। येह इन्तिहा दरजे की तौबीख़ है क्यूं कि येह तो वोह यक़ीनी जानते होंगे कि न आज कोई मक्र चल सकता है न कोई ह़ीला काम दे सकता है। **30 :** जो अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ रखते थे जन्नती दरख़्तों के **31 :** उस से लज़्ज़त उठाते हैं, इस आयत से साबित हुवा कि अहले जन्नत को उन के ह़स्बे मरज़ी ने'मतें मिलेंगी, ब ख़िलाफ़ दुन्या के कि यहां आदमी को जो मुयस्सर आता है उसी पर राज़ी होना पड़ता है और अहले जन्नत से कहा जाएगा **32 :** लज़ीज़ ख़ालिस जिस में ज़रा भी तनग़्ग़ुस (बद मज़गी) का शाएबा नहीं **33 :** उन त़ाआ़त का जो तुम दुन्या में बजा लाए थे **34 :** इस के बा'द तह़दीद के त़ौर पर कुफ़्फ़ार को ख़ित़ाब किया जाता है कि ऐ दुन्या में तक्ज़ीब करने वालो ! तुम दुन्या में **35 :** अपनी मौत के वक़्त तक **36 :** काफ़िर हो, दाइमी अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ हो।

www.dawateislami.net

اِذَا قِیۡلَ لَہُمُ ارۡکَعُوۡا لَا یَرۡکَعُوۡنَ ﴿۴۸﴾ وَیۡلٌ یَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُکَذِّبِیۡنَ ﴿۴۹﴾

जब उन से कहा जाए कि नमाज़ पढ़ो तो नहीं पढ़ते उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी

فَبِاَیِّ حَدِیۡثٍۭ بَعۡدَہٗ یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۵۰﴾ ع

फिर इस[37] के बा'द कौन सी बात पर ईमान लाएंगे[38]

ركوع ۲
۲۲

37 : क़ुरआन शरीफ़ **38 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ कुतुबे इलाहिय्यह में सब से आख़िर किताब है और बहुत ज़ाहिर मो'जिज़ा है, इस पर ईमान न लाए तो फिर ईमान लाने की कोई सूरत नहीं।

www.dawateislami.net